IJAER/ May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

''कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन''

कमला **डॉ. विनोद भाम्बू**
पी-एच.डी. (शोधार्थी) शोध निर्देशिका

शोध आलेख सार -

समायोजन वह स्थिति है जो दो विपरीत स्थितियों में अपने को संतुलित रखना और अपने अनुकूल अपना पथ चयन करना। बालिका पारिवारिक परिवेश से जब विद्यालयीय वातावरण में प्रस्थान करती है तो इस पर पारिवारिक संस्कार उस पर आच्छादित रहते हैं। वो बच्ची माँ का आँचल छोड़कर, माँ की अंगुली पकड़कर जब विद्यालय की ओर प्रस्थान करती है तब विद्यालयी वातावरण उसे अनजान तथा कठिन समझ वाला लगता है। प्रारम्भ में वह संकुचाते हुए विद्यालय में अपना प्रथम कदम रखती है वही बच्ची शनैः-शनैः उस विद्यालयी वातावरण में इतनी घुलमिल जाती है कि अपने परिवार को विद्यालय समय में लगभग भूल जाती है। विद्यालय और उसका वातावरण उसके लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा होती है। अब ये बच्ची पारिवारिक वातावरण और विद्यालय वातावरण दोनों के मध्य समायोजन करती है।

मूल शब्द - समायोजन, बालिका, सर्व शिक्षा अभियान।

भूमिका -

मानव संस्कृति के विकास के दो प्रमुख अंग है पुरूष और महिला। प्राकृतिक दृष्टि से मनुष्य को जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और जन्मजात पूर्ण विकास में निश्चित रूप से सफलता योग देती है, लेकिन इस सभ्यता को दिव्य और वैभवपूर्ण बनाने में संस्कृति का गौरवपूर्ण योगदान सदा से रहता रहा है और संस्कृति का मूल है परिवार। परिवार सामाजिक संदर्भ में रूढ़ियों, परम्पराओं, रीति-रिवाजों तथा धार्मिक दृष्टि से आस्था से जुड़ा हुआ रहा है। ये सभी मानव संस्कृति के पालने रहे है, जिनके मूल में हैं स्त्री और पुरूष।

शोधकर्त्री ने कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय योजना को अपने अध्ययन का मुख्य विषय के रूप में चयन किया है जो कि उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं के लिए सीमित है। इस

आवासीय बालिका योजना के अन्तर्गत अध्ययनरत बालिकाओं में उनके मानवीय मूल्यों में जैसे – संस्कार, दायित्वों का पालन, अनुशासन, सहयोग, ईमानदारी, सादगी, उच्च आकांक्षाएं, उत्तरदायित्व को पूर्ण करने की भावना, आज्ञाकारिता, आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता तथा राष्ट्रीय सम्मान की भावना आदि सभी के विकास हेतु प्रयास किये जाते हैं।

सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत कस्तुरबा गांधी आवासीय विद्यालयों की योजना चलाई जा रही है। एन.पी.ई.जी.एल. योजना के अन्तर्गत चयनित ब्लॉकों में से प्रथम चरणों में 56 ब्लॉकों तथा द्वितीय चरण में 130 ब्लॉकों में कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय भारत सरकार द्वारा स्वीकृत है। यह योजना राज्य के कुल 33 जिलों के 186 शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लॉको में स्वीकृत है । इनमें से 131 कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय मॉडल एवं 55 कस्तुरबा गांधी मॉडल तृतीय के अन्तर्गत स्वीकृत किए गए हैं। इस योजना के अन्तर्गत प्रारम्भिक स्तर पर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन–जाति, अन्य पिछडा वर्ग, अल्पसंख्यक तथा बी.पी.एल. परिवारों की बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय खोले जाते है।

समायोजन वह स्थिति है जो दो विपरीत स्थितियों में अपने को संतुलित रखना और अपने अनुकूल अपना पथ चयन करना। बालिका पारिवारिक परिवेश से जब विद्यालयीय वातावरण में प्रस्थान करती है तो इस पर पारिवारिक संस्कार उस पर आच्छादित रहते हैं। वो बच्ची माँ का आँचल छोड़कर, माँ की अंगुली पकड़कर जब विद्यालय की ओर प्रस्थान करती है तब विद्यालयी वातावरण उसे अनजान तथा कठिन समझ वाला लगता है। प्रारम्भ में वह संकुचाते हुए विद्यालय में अपना प्रथम कदम रखती है वही बच्ची शनैः–शनैः उस विद्यालयी वातावरण में इतनी घुलमिल जाती है कि अपने परिवार को विद्यालय समय में लगभग भूल जाती है। विद्यालय और उसका वातावरण उसके लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा होती है। अब ये बच्ची पारिवारिक वातावरण और विद्यालय वातावरण दोनों के मध्य समायोजन करती है।

समायोजन को सामंजस्य, व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है–सम और आयोजन। सम का अर्थ है भली–भाँति, अच्छी तरह या समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। अतएव समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढ़ंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी हो जायें, मानसिक द्वन्द न उत्पन्न होने पायें। अनेक आवश्यकताएं ही व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति की ओर प्रेरित करती हैं। जब व्यक्ति को अपने लक्ष्य की प्राप्ति सरलता से हो

जाती है, तो उसे संतोष का अनुभव होता है नहीं तो, उसे निराशा एवं असंतोष की अनुभूति होती है। ऐसे में जो व्यक्ति यदि सृजनात्मक और परिस्थितियों के अनुकूल रहकर समायोजन स्थापित कर लेता है, वही व्यक्ति यदि बाधाओं को दूर करने में असमर्थ रहता है तो उसमें कुसमायोजन उत्पन्न हो जाता है। साधारणतयाः समायोजन की यह प्रक्रिया व्यक्ति के जीवन में निरन्तर चलती रहती है।

अध्ययन का महत्व

शोधकर्त्री ने कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन में आने वाली समस्याओं एवं समाधानों का अध्ययन किया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है, बल्कि कस्तुरबा गांधी उच्च प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं के समायोजन में आने वाले समस्याओ एवं समाधानों को लेकर शोध अध्ययन नहीं हुआ है। अतः कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन में आने वाली समस्याओं एवं समाधानों का अध्ययन कर सरकार, संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

अध्ययन का औचित्य

इस दिशा में अलग–अलग चरों पर अनेक अध्ययन सम्पादित हुए, लेकिन **''कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन''**पर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। यह कार्य एक नवाचार शैक्षिक लक्ष्य पर विद्यालय उपयोगी, समाज उपयोगी एवं छात्राओं के लिए फलदायी होगा। किसी भी अध्ययन की सार्थकता उसकी आवश्यकता के स्वरूप एवं उपयोगितात्मक पहलुओं पर निर्भर करती है। साथ ही इस संदर्भ में यह देखा जाता है कि अध्ययन समाज को क्या नई दिशा देने वाला है। उपर्युक्ता मानक रूपी दृष्टिकोण को मध्यनजर रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन सार्थक एवं औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन : –

''कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन''

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं के सहपाठी छात्राओं के साथ समायोजन का अध्ययन करना।

2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का आवासीय स्थान पर आपसी समायोजन का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं : –

1. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का सहपाठी छात्राओं के साथ समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का आवासीय स्थान पर आपसी समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमन

1. यह अध्ययन जयपुर मण्डल तक सीमित है।
2. यह अध्ययन कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों तक सीमित है।
3. यह अध्ययन कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय की छात्राओं तक ही सीमित है।
4. यह अध्ययन जयपुर मण्डल के जिलों के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की 450 कस्तूरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान की विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है। यह अनुसन्धान की एक वैज्ञानिक विधि है इसके द्वारा एकत्रित दत्त प्रामाणिक एवं विश्वसनीय माने जाते हैं ।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

समायोजन मापनी :– स्वनिर्मित

समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :–

सारणी संख्या–1

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का सहपाठी छात्राओं के साथ समायोजन का अध्ययन।

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का सहपाठी छात्राओं के साथ

समायोजन के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
18	82	0	14.86 से 21.13 तक	78.86 से 85. 13 तक	0 से 0 तक

उक्त सारणी में **कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का सहपाठी छात्राओं के साथ समायोजन** के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 14.86 से 21.13 प्रतिशत सहपाठी छात्राओं के साथ समायोजन औसत से उच्च स्तर पर पाया गया। 78.86 से 85.13 प्रतिशत समायोजन औसत तथा 0 से 0 प्रतिशत समायोजन औसत से निम्न पाया गया। अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी संख्या –2

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का आवासीय स्थान पर आपसी समायोजन का अध्ययन।

कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का आवासीय स्थान पर आपसी समायोजन के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
12	76	12	5.50 से 18.49 तक	67.45 से 84. 54 तक	5.50 से 18.49 तक

उक्त सारणी में **कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं का आवासीय स्थान पर आपसी समायोजन** के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार 5.50 से 18.49 प्रतिशत आवासीय स्थान पर आपसी समायोजन औसत से उच्च स्तर पर पाया गया। 67.45 से 84.54 प्रतिशत समायोजन औसत तथा 5.50 से 18.49 प्रतिशत समायोजन औसत से निम्न पाया गया। अतः इस संदर्भ में उक्त परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारांश –

शोधकर्त्री ने कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार का अध्ययन कार्य आज तक बहुत ही कम हो पाया है, बल्कि कस्तुरबा गांधी उच्च प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं के समायोजन को लेकर शोध अध्ययन नहीं हुआ है। अतः कस्तुरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन कर सरकार, संचालकों, समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा दिखाने में यह शोधकार्य मार्गदर्शन कर सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

- पाण्डेय, रामशकल (2008). शिक्षा दर्शन और शिक्षाशास्त्री, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा, आर.ए. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान के कूल तत्व, मेरठः आर. लाल बुक डिपो।
- वर्मा, प्रति एवं श्रीवास्तव डी.एन. (2009). आधनिक सामान्य मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा, आर.ए (2011). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, मेरठः आर.लाल. बुक डिपो।
- शर्मा, एस.एन. एवं भार्गव, विवेक (2012). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रयोग + परीक्षण, आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाऊस।
- तोमर, देवेन्द्र पाल सिंह (2012). रिसर्च मैथ्डोलॉजी तकनीक तथ उपकरण, नई दिल्लीः विश्वभारती पब्लिकशन्स।
- पचौर, गिरीश (2014). शैक्षिक निबन्ध, मेरठः आर.लाल बुक डिपो।
- सिंह, रामपाल (2014). अधिगमकर्ता का विकास, शिक्षण तथा अधिगम का मनोविज्ञान, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स। पृ.स. 226, 227,228.
- शर्मा, आर.के. नागदा, बी.एल., दूबे. एस.के. एवं तिवारी अंजना (2015). आधुनिक विश्व में विद्यालयी शिक्षा, आगराः राधा प्रकाशन मन्दिर प्रा.लि.। पृ. स. 156
- सिंह, अरूण कुमार (2015). मनोविज्ञान, सामाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास।
- श्रीवास्तव डी.एन.एवं श्रीवास्तव, वी.एन. (2015). आधुनिक विकासातमक मनोविज्ञान, आगराः श्री विनोद पुस्तक मन्दिर।

- शर्मा, देवेन्द्र प्रकाश (2017), 'रिसर्च मेथडॉलॉजी' पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
- पाण्डेय, राजेश कुमार (2012). कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन, रिसर्च पेपर, इन्टरनेशन जरनल ऑफ एज्यूकेशन। पृ.सं. 3